E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

1857 की क्रांति में हरियाणा का योगदान

पूजा

शोधार्थी, इतिहास –विभाग, कुरूक्षेत्र विश्विवद्यालय कुरूक्षेत्र

Paper Received date

05/03/2025

Paper date Publishing Date

10/03/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15556664

IMPACT FACTOR 5.924

ABSTRACT

हरियाणा में ' चौदह की साल' मुहाबरा सन् 1857 की क्रांति से संबंधित है, जोकि विक्रती संवत 1914 में हुई थी । 10 मई 1857 को मेरठ मे हुई सैनिक क्रांति की आगे 13 मई 1857 को हरियाणा मे अबाला कैंट तक पहुच गई । परिणामरूवरूप क्रांतिकारी सैनिक कों के सामना गुयग्राम के कलेक्टर विलियम फोर्ड से हुआ। अतंतः फोर्ड को अपनी जान बचाकर वहां से भागना पड़ा । 17 जून 1857 को उद्या नामक गांव (हिसार) में नबाव नूर मोहम्मद खा और अग्रेजों मे झड़प हो गई, जिसमें नवाब को गिरफतार कर के फांसी दे दी गई । हिसार , हांसी तथा सिरसा मे स्थित ' लाइट इन्फैंट्री ने भी बागवत की। अग्रेजों ने हिसार पर अधिकार करने के लिए 17 जुलाई 1857 को कोर्टलैंड के नेतृत्व में सेना भेजी । सन् 1857 की क्रांति में बल्लभगढ़ के अंतिम राजा नाहर सिंह शहिद हो गए। जयपुर राज्य के अंग्रेजो रेजिडेंट मेजर ऐडम ने मवे ातियों की क्रांति को कुलचने का प्रयास किया, किंतु हरियाणा के सोहना व तावड़ के संघर्ष में उसे पराजित होकर भागना पडा । रोहतक पर स्थिति को नियंत्रित करने के लिए अंग्रेजो ने अबांला ने एक सेना अगस्त को हडसन के नेतृत्व म` भेजी थी। हडसन ने रोहतक का जींद राज्य के अधीन किया । क्रांति मे प्रमुख योगदान दने` वाले व्यकियों में फर्रूखनगर के नवाब अहमद अली , बल्लभगढ़ के अंतिम राजा नाहर सिंह और पटौदी के अकबर अली सम्मिलित थे इनके अतिरित्क दो अहीर भाई, नारनौल (रेवाड़ी) से राव तुलाराम और गोपाल देव शामिल थे। राव तुलाराम की याद म` 23 सितंबर (1857) को प्रतिवर्ष शहीदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

प्रस्तावना :–

हरियाणा में चौदहा की साल मुहावरा सन् 1857 की क्रांति से संबंधित है जोकि विक्रम संवत वर्ष 1914 में हुई थी । 10 मई 1857 को मेरठ म` हुए सैनिक क्रांतिकारियों की आग 13 मई 1857 को हरियाणा के अंबाला कैंट तक पहुंच । अंबाला की 5 वीं पलटन ने विद्रोह किया । इस क्रांति का नेतृत्व मोहन सिंह ने किया । क्रांतिकारी सैनिकों को नियंत्रित करने के लिएविलियम फोर्ड अंबाला पहुंचे । विलियम फोर्ड ने भारतीय सैनिकों को घेरकर समर्पण के लिए बाध्य कर दिया , किंतु मेरठके सैनिको ने दिल्ली में अंग्रेजो पर आक्रमण करके देश में प्रथम स्वतन्त्रता आंदोलन की शुरूआत कर दी गई थी। 13 मई1857 को दिल्ली से 300 सैनिकों का

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

एक दस्ता गुरूग्राम की ओर बढा । अंग्रेज कलक्े टर विलियम फोर्ड ने उन्हें रोकने का प्रयास किया,असफल रहा। सैनिकों ने गुरूग्राम के सरकारी खजाने को लूट लिया । राव तुलाराम न` अपने भाई गोपाल देव के साथ अहीरो को संगठित करके अंग्रेजों से नसीरपुर नामक स्थान पर संघर्ष किया। इन सफलताओं से प्रभावित होकर फर्रूखनगर के अहमद अली और बल्लभगढ़ के अतिम शासक नाहर सिंह भी क्रांति में शामिल हो गए, किंतु उन पर अंग्रेजोके साथ संबंध रखने के आरोप भी लगते रहे । जून 1857 में जयपुर राज्य के अंग्रेज रेजिडेंट मेजर ऐडन ने एक बड़ी सैनिक टुकड़ी और तोपखाने के साथ मेवातियों के विद्रोह को कुचलने का प्रयास किया । हरियाणा के सोहना और तावडू के मध्य कई संघर्ष हुए । अंत मे मेजर ऐडन को असफल होकर वापिस जाना पड़ा । रोहतक मे मई 1857 के अंत में क्रांति का आरंभ हुआ । रोहतक पर अंग्रेजों का नियंत्रण लगभग समाप्त हो गया । अंग्रेजो ने अंबाला से एक सेना रोहतक पर नियंत्रण करने के लिए भेजी , किंतु इस सेना ने भी विद्रोह कर दिया । अगस्त 1857 में हडसन के नेतृत्व में एक सैन्यटुकड़ी ने रोहतक के निकट सूबेदार बिसारत से खरखोदा में कड़ा मुकाबला किया और यहां पर अग्रेजों ने विजय प्राप्त की । जींद के राजा ने हडसन का साथ दिया । हडसन ने रोहतक पर अधिकार कर जींद में मिला दिया, किंतु दिल्ली में अंग्रेजो की कमजोर स्थिति के कारण उसे वापस लौटना पड़ा । मई 1857 में मोहम्मद आजम के नेतृत्व में हिसार में भी क्रांति की शुरूआत हुई और हरियाणा लाइट इन्फैंट्री की सैन्य टुकडियों ने हिसार व सिरसा मे स्थित अपने शिविरों में विद्राह कर दिया । जनरल वार्न कोर्टलैंड के नेतृत्व मे फिरोजपुर से आई अंग्रेज सेना ने क्रांतिकारियों से मुकाबला कियां जून 1857 मे उद्या ग्राम में नवाब नूर मोहम्मद खान के नेतृत्व मं` क्रांतिकारियों ने अग्रेजों संघर्ष किया। इस संघर्ष में अंग्रेज सेना विजयी हुई । इसके बाद अंग्रेज सेना ने चतरावन नामक ग्राम में उत्पात व लोगों पर अत्यचार किए ।इस ग्राम के लोगों ने एक अग्रेजो अधिकारी हिलार्ड को मार दिया । अंग्रेजो ने खिरका नामक ग्राम मे भी निर्दयता पूर्वक लोगो का मारा व ग्राम मे आग लगा दी । पानीपम और कुरूक्षेत्र के निकट थानेसर म` भी 1857 की क्राती का प्रभाव रहा। पानीपत मे क्रांति का नेतृत्व इमाम अली कलंदर ने किया । यहां पर लोगो ने अग्रेजी प्रशासन का प्रभाव लगभग पूरी तरह समाप्त कर दिया । पजांब व उतरी भारत को दिल्ली से जोडने वाला मुख्य मार्ग जी टी रोड इन्हीं क्षेत्रों से गुजरता था ।अतः अंग्रेज इस क्षेत्र पर अधिकार बनाए रखना चाहते थे । अंग्रेजो ने अपने समर्थक पटियाला, कुजपुरा,जींद व करनाल के स्थानीय शासकों की सहायता से इस क्षेत्र में क्रांति का दबाना चाहा , किंतु प्रारभ में अग्रेजों की पराजय हुई । करनाल मे भी विद्रोह होने पर अंग्रेजो सेना ने हमला किया , जिसमें अग्रेज बुरी तरह परजित होकर भागे । पानीपत मे कलंदर मस्जिद के इनाम के नेतृत्व में भी क्रांतिकारियों के विरूद्ध आवाज उठाई । 1857 की क्राती का दिल्ली में दमन करने के पश्चात अंग्रेजो दिल्ली से लगे हरियाणा की ओर बढने लगे । हरियाणा के तोशाम में क्राति का दमन करने के लिए ब्रिटिश जनरल वनै कोर्टलैड को नियुकत किया गया । कोर्टलैउ ने हासी के निकट क्रातिकारियों का दमन किया । हिसार तथा रोहतक मे कैप्टन पीयर्सन ने क्रातिकारियों का दमन किया । थानेसर क्षेत्र मे डिप्टी कमिश्रनर मकै नील ने क्रातिकारियों का दमन किया। 1857 की क्राति का हरियाणा की प्रशासनिक तथा राजनैतिक व्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ा । 1858 ईस्वी के चार्टर एकट मे उत्तर पश्चिम हरियाण का अधिकार क्षेत्र पंजाब प्रांत में शामिल कर

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

दिया गया । दिल्ली डिवीजन का मुख्यालय दिल्ली था। इसमें दिल्ली , गुरूग्राम ,तथा पानीपत जिले को सम्मिलित किया गया। जींद रियासत के राजा सरूपसिंह को दादरी की पूरी रियासत तथा महेंद्रगढ के कानोड के कुछ परगने इनाम मे दिए । पटियाला रियासत के महाराजा का नारनौल के समीपवर्ती क्षेत्र का बहुत बडा भू– भाग पुरस्कार स्वरूप दिया गया ।

निष्कर्ष :–

1857 ईस्वी में स्वतन्त्रता संग्राम की परिस्थितियों का निर्माण किया गया । इसमें न केवल हरियाणा बल्कि पूरे भारत के लोगों ने अपनी वीरता दिखाई । सैनिको से लेकर साधारण जनता ने इसमें बढ चढ कर भाग लिया। 1857 के इस संग्राम में हरियाणा के वीर पुरूषों के साथ साथ वीर नारियों का भी योगदान रहा । 1857 ईस्वी के इस स्वतन्त्रता संग्राम में सैनिकों से लेकर बच्चें, बूढों तथा स्त्रियों तक ने अपना योगदान दिया। भले ही 1857 ईस्वी की ये क्रांति भले ही सफल नहीं हो सकी, परंतु इस क्रांति मे स्वतन्त्रता के बीज बोए गए जो 15 अगस्त 1947 को आज़ादी रूपी पेड़ बनकर उभरे ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. Sahni,K.P.,Haryana and the 1857 Revolt,Haryana sahitya akademi 2007.
2. Kadian,R.P. Haryana in the first War of independence, Naitonal Bank trust 1989.
3. Saini ,Shyam singh,Haryana contribution to the 1857 Revolt, Haryana Publication 1995.
4. Gulati , H.R., Haryana and the mutiny of 1857, Haryana Historical society 1991.
5. Chaudhary Harvinder Singh, Haryana ka yogdan 1857 ki kranti me, Rajkamal Prakashan 2004.